International Journal Of Advances In
ENGINEERING, SCIENCE, COMMERCE, MANAGEMENT AND LAW

International Journal of Advances in Engineering, Science, Commerce, Management, and Law
ISSN : 3048-8427 (Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal)

Original Article

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की प्रासांगिकता

राजेश पाण्डेय
शोधार्थी
शिक्षा शास्त्र विभाग,
राधा गोविन्द विश्वविद्यालय, रामगढ़, झारखण्ड़

सारांशः

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने के लिए किया गया एक प्रयास है जिसके अन्तर्गत बालक के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करने के लिए शैक्षिक के साथ ही साथ सह–शैक्षिक गतिविधियों को भी शिक्षण प्रक्रिया में शामिल किया गया है। जिससे शिक्षण–अधिगम की प्रक्रिया गतिविधि आधारित आनन्ददायी रूचिकर और उपयोगी हो जाती है। जिससे बच्चे अपनी क्षमता, गति, रूचि एवं आवश्यकानुसार स्वयं करके सीखने के अधिकाधिक अवसर प्राप्त कर पाते है। पृष्ट पोषण की प्रक्रिया, शिक्षण प्रतिफल को प्राप्त करने में महती भूमिका निभाती है। मूल्यांकन की सतत् एवं व्यापकता, अधिगम का हीं एक हिस्सा हो जाती है जो अधिगम को स्थायी एवं प्रभावी बनाती है। मूल्यांकन की प्रक्रिया समय–सापेक्ष न होकर सतत् प्रवाहमान होनी चाहिए ताकि शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया से प्राध्यापकों व प्रशिक्षुओं के मध्य संवाद की स्थिति बेहतर बन सके और बाल केन्द्रित वातावरण का निर्माण किया जा सके। अधिगम प्रतिफल उदेश्य प्राप्ति के साथ–साथ कक्षावार, विषयवार सीखने की कमियाँ को कम किया जा सके। इसके लिए शासन, प्रशासन, संस्था प्रधान, प्राध्यापकों, अभिभावकों, पूर्व छात्रों, नियोक्ता वर्ग, समुदाय, परिजन व विभिन्न हितधारकों का साझा सहयोग एवं सहभागिता की आवश्यकता महसुस होती है। जो सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन प्रक्रिया का मूल अवधारणा है। जिससे केवल आकलन में ही बदलाव नहीं होता है बल्कि सीखने सिखाने का प्रक्रिया की गुणवत्ता भी बढ़ती है।

कुंजी शब्दः सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन, शिक्षण–अधिगम

परिचयः

मानव जीवन के सर्वांगीण विकास में शिक्षा एक शक्तिशाली साधन है जबकि मूल्यांकन एक अहम हिस्सा है। मूल्यांकन के अभाव में शिक्षा व मानव जीवन उदेश्यहीन व दिशाहीन हो जायेगी। जिसके कारण हम अपने संसाधनों का समुचित उपयोग न कर पाने की स्थिति में चलते जायेंगे। अतः मूल्यांकन शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का स्वतः भाग बन जाती है। जैसे–जैसे समय व्यतित होता चला गया, मूल्यांकन के स्वरूप में भी परिवर्तन होते चले गये। श्रुति मूल्यांकन का स्वरूप, लिखित में बदल गया और उदेश्य के अनुरूप विभिन्न एतिहासिक कालों में इसका स्वरूप परिवर्तित होता रहा। मूल्यांकन की परम्परागत पद्धतियों के प्रति मनोवैज्ञानिकों एवं विभिन्न सरकार द्वारा गठित आयोगों ने समय–समय पर सुधार करने की अनुशंसा करते रहे। इस क्रम में सन् 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने देश में शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक सुधार करने के साथ ही साथ मूल्यांकन के क्षेत्र में भी सुधार करने की अनुशंसा की और सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन को अपनाने पर जोर दी। जिससे बालक के ज्ञानात्मक, भावात्मक व क्रियात्मक सभी पक्षों का मूल्यांकन निरन्तर होता रहे। इस क्रम में सन् 2005 में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा एवं 2009 में शिक्षा का अधिकार अधिनियम आई। जिससे शिक्षा की गुणवत्ता पर अधिक बल देने की बात कही जो तभी सम्भव हो पाता जब हम सही ढंग से मूल्यांकन करने में सक्षम हो पाते।

समय की मांग को ध्यान में रखते हुए तात्कालीन देश के मानव संसाधन मंत्री श्रीमान कपिल शिब्बल साहब ने मूल्यांकन के क्षेत्र में सतत् एवं व्यापक रूप को लागू करने की बात कही और सन् 2009 मे ही सी.बी.एस.ई. ने इसे अपना भी ली। साथ ही साथ देश के सभी राज्यों के मंत्रीयों से इसे लागू करने की सुझाव भी दिया। सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन से अभिप्राय बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए उनका निरन्तर आकलन करना तथा उन्हें उनकी आवश्यकता के अनुरूप सहायता प्रदान करना है। वाइगोत्स्की के सिद्धान्त Zone Of Proximal,

Development(ZPD) के द्वारा प्रत्येक बच्चे के वास्तविक अधिगम् स्तर तथा अपेक्षित अधिगम स्तर में अन्तर होता है। बच्चे अपने प्रयासों के द्वारा एक अधिगम स्तर को प्राप्त करने में सक्षम होते हैं, लकिन यदि उन्हें उचित सहायता तथा मार्गदर्शन मिल जाए तो वे उस स्तर से उपर जा सकते है। इस क्षेत्र को ही उन्होने ZPD की संज्ञा प्रदान किये। सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के द्वारा शिक्षक यह आकलन आसानी से कर लेते हैं कि बच्चे कितना कार्य बिना किसी के मदद से कर सकते हैं? कहाँ उन्हें कुछ सहायता की आवश्यकता होंगी? एवं कहाँ शिक्षक को स्वयं प्रयास करके बच्चों की सीखने में आने वाली बाधाओं को दूर करना पड़ेगा। इस प्रकार की रणनीति के साथ शिक्षक अपने विद्यार्थियों की अर्न्तनिहित गुणों व क्षमताओं का पूरी तरह से विकास कर पाते है।

आवश्यकतानुसार अपने द्वारा प्रयोग में लाई जा रही शिक्षण–विधियों, व्यूहो में भी परिवर्तन करते हुए परिणाम–आधारित मूल्यांकन, प्रक्रिया आधारित मूल्यांकन को ग्रहण कर लेते है। क्योंकि प्रत्येक बच्चे की प्रगति का आकलन उसी की पूर्व स्थिति से करना चाहिए और हमें बच्चों की तुलना एक दूसरे से करने से बचना चाहिए। लेकिन बात यह भी है कि सभी बच्चों को उनकी आवश्यकता के अनुसार सीखने के अवसर उपलब्ध कराये जाएँ। यहाँ यह उल्लेखित करना चाहूँगा कि किसी भी कक्षा में सभी बच्चे एक जैसे नहीं होते हैं। वे विभिन्न आयु वर्ग संज्ञानात्मक स्तर समुदाय व सामाजिक स्तर से आते है जिनकी सीखने की गति व तरीके भिन्न–भिन्न होते है। ऐसे में यह जवाबदेही बनती है कि उन्हे उनकी आवश्यकतानुरूप सीखने के अवसर तथा आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराया जाए।

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के सैद्धान्तिक आधार

इसके सैद्धान्तिक पक्ष में यह समाहित है कि बच्चों की विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए सीखने–सिखाने की प्रकिया में गुणात्मक एवं साकारात्मक बदलाव किया जाए। इस क्रम में पहली अवधारणा सत्तता, दूसरी व्यापकता जबकि तीसरा पक्ष आकलन एवं मूल्यांकन है। इस प्रक्रिया में समुदाय और बच्चों को जोड़कर सीखने–सीखाने में गुणात्मक सुधार की भावना समाहित है जिससे बच्चों के अधि–संज्ञानात्मक क्षमता का भी विकास होता रहे। बहुत सारे मनोवैज्ञानिक शोध में यह स्पष्ट हो चुका है कि जैसे–जैसे बच्चे स्वयं सीखने के प्रति सजग होते जाते है, वैसे–वैसे ही बुद्धिमता में वृद्धि होती जाती है और विभिन्न शैक्षिक स्तर के बच्चों को सुधार का समान अवसर प्राप्त हो सके। अतः निम्न सिद्धान्तों पर आधारित है–

- निरन्तरता का सिद्धान्त।
- व्यापकता का सिद्धान्त
- व्यक्तिगत भिन्नताओं का सम्मान
- सुधारात्मक व निदानात्मक प्रक्रिया ।
- बहु आयामी मूल्यांकन।

- **सत्तता –** सत्तता का आशय लगातार व निरंतर चलने वाली प्रक्रिया से है। यह प्रक्रिया शिक्षण के पूर्व, शिक्षण के दौरान, सत्तत अवलोकण कक्षा शिक्षण, समीक्षा, पृष्टपोषण व रचनात्मक व निदानात्मक रूप ग्रहण करते हुए सतत् सुधारात्मक रूप ग्रहण करते हुए सतत् सुधारात्मक नियोजन से सीधी–सीधी जुड़ी हुई है। जैसे इकाई परीक्षण गृह कार्य मूल्यांकन अवलोकन, पोर्ट फोलियो तैयार करना साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक–त्रैमासिक, सेमेस्टर परीक्षा व टर्मइण्ड परीक्षा शामिल है जो आन्तरिक व वाह्य दोनों रूप मे लिखित या मौखिक, सैद्धांतिक व प्रायोगिक क्षेत्र आधारित परीक्षण कुछ भी हो सकती है।
- **व्यापकता–** मूल्यांकन की व्यापकता का सीधा सम्बन्ध मूल्यांकन के क्षेत्रों एवं अपनाई गई तरीकों की व्यापकता से है। यह बच्चों को प्रदान की जाने वाली शैक्षिक मूल्यांकन के अवसर जैसे लिखित व मौखिक परीक्षण, सैद्धांतिक व व्यवहारिक पक्षों की जाँच, आंतरिक व वाह्य परीक्षण के अवसर जिसमें unit test मासिक परीक्षण, त्रैमासिक परीक्षण, समसत्र परीक्षा व टर्म पेपर, Library and labwork Assignment, परियोजना कार्य, वर्कशाप, कान्फ्रेस, आर्टिकल लेखन, विभिन्न शैक्षिक व सह–आर्टिकल गतिविधियाँ जैसे समूह कार्य, नेतृत्व क्षमता, उदधोषक, सम्प्रेषण व उपस्थिति मानवीय मूल्यों व हरित भावना इत्यादि के साथ साथ डिजर्टेशन प्रस्तुतीकरण व प्रतिवेदन लेखन अत्यादि है जिससे बालक के शैक्षिक के साथ ही साथ सह–शैक्षिक गुणवता का विकास सम्भव हो पाता है।

- **आकलन एवं मूल्यांकन–** आकलन, मूल्यांकन का आधार होता है जिसके द्वारा कार्य की प्रक्रिया में निरन्तर सुधार किया जाता है जो छोटे–छोटे उद्देश्यों के साथ किया जाता है। जबकि मूल्यांकन वह प्रक्रिया है जिसमें अपेक्षित दक्षताओं के विकास के स्तर का निर्धारण स्वनिर्णय के समावेश के साथ किया जाता है।

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के लाभः

- यह बच्चों को रचनात्मक रूप से उनके प्रदर्शन के बारे में जानकारी प्रदान करता है पृष्ट–पोषण के माध्यम से बच्चे अपनी कमी व शक्ति को पहचान पाने में सक्षम हो पातें है जिसके आधार पर कमी को कम करते हुए शक्ति को बढ़ा कर बेहतर बन जाते हैं।
- यह बच्चों को अनावश्यक रूप से परीक्षा सम्बन्धी बोझ एवं चिन्ताओं का कम करने में मदद करता है।
- यह शिक्षकों व प्रध्यापकों को भी मार्गदर्शित करता है जिससे वे बच्चों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए अपनी शैक्षिक व सह–शैक्षिक गतिविधियों की योजनाएँ तैयार कर क्रियान्वित करने में सक्षम हो पाते है।
- यह बच्चों की सम्पूर्ण प्रगति के लिए किया जाने वाला एक निरंतर प्रयास है जो न केवल अंक या ग्रेड प्रदान करता है बल्कि बच्चों के द्वारा सीखने के स्तर में की गई वृद्धि व विकास का सम्पूर्ण आलेख तैयार करने में सक्षम बनाता है जिसके आधार पर हम बच्चे द्वारा भविष्य में किये जाने वाले विशिष्ट क्षेत्र में कार्य की पूर्वानुमान लगा पाते है।
- निदानात्मक मूल्यांकन स्वरूप व रचनात्मक स्वरूप होने के कारण सुधार के प्रयाप्त अवसर प्राप्त होते रहते है।
- मेन्टर मेन्टी के रूप में हम मेन्टी की विशेषताओं, क्षमताओं के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त कर पाते है।
- आवश्यकतानुसार निर्देशन व परामर्श की गुंजाईस बनी रहती है।

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में विशेष ध्यान रखने वाली बातेंः

- **सीखने सिखाने की प्रक्रियासुधारात्मक उद्देश्य–**सी0 सी0 ई0 के अन्तर्गत सुधारात्मक उदेश्य के होने का तात्पर्य यह है कि कक्षा व जीवन में उपयोगी होने वाले अधिगम उद्देश्यों व लक्ष्यों से प्रेरित मूल्यांकन कार्य किया जाए। एक समान दतकार्य या प्रोजेक्ट के स्थान पर प्रयोगात्मक कार्यों को बढ़ावा दिया जाए जिससे सभी बच्चे में अपेक्षित सुधार हो सके।
- **आकलन निष्पक्ष और सही तरीके से हो–** शिक्षक स्वायत रूप से निष्पक्ष तरीकों को अपनाते हुए बाल केन्द्रित मूल्यांकन को लागु करें। जिसका सीधा सम्बन्ध सीखने–सीखाने से होना चाहिए। बच्चों को दिन–प्रतिदिन के अवसरों व अनुभवों के अनुरूप सीखने का वातावरण तैयार कियाजाए और विभिन्न प्रकार के उपकरणो व विधियों के माध्यम से शिक्षक उन कौशलों का आकलन करें जिन्हें वे सीखाने का प्रयास कर रहे थे।
- **सुधार के प्रर्याप्त अवसर उपलब्ध हो–**व्यक्तिगत भिन्नता के आशय ने यह स्पष्ट कर दिया है कि हरेक बच्चों के सीखने के गति, तरीके मात्रा समान नहीं होती है तब उनके द्वारा अर्जित ज्ञान व क्षमता का मूल्यांकन भी, किसी एक समय व एक परीक्षण के पैमाने से सम्भव नहीं हो पायेगी। अतः हमें बच्चों को प्रर्याप्त अवसर प्रदान करना चाहिए। जिससे उनका सही से मूल्यांकन हो सके।
- **शैक्षिक सत्र व कक्षावार/समसत्र वार पाठ्यक्रम का विभाजन,संशोधन व विकास–** किसी भी पाठ्यक्रम के विषय समसत्रवार व विषयवार विभाजित होते हैं औरी विभिन्न विषयवार विभाजित होते हैं और विभिन्न नियामकों का अनुसरण करते हुए तय समयसीमा के अन्तर्गत समाप्त कर निरन्तर मूल्यांकन के प्रर्याप्त अवसर प्रदान करते हैं जो उसके शिक्षण प्रतिफल के रूप में निर्धारित किये जाते हैं। अतः विद्यार्थियों को कम–कम सामग्री उपलब्ध करा कर आसानी से प्रायोगिक व सैद्धांतिक पहलुओं की समझ विकसित करने के रूपरेखा तैयार किया जाता है।
- **गतिविधि आधारित अधिगम व मूल्यांकन–**शिक्षा के स्वरूप गतिविधि आधारित होने के परिणाम स्वरूप मूल्यांकन भी गतिविधि आधारित हो गई है जिसमें बच्चों को करके सीखने, इन्टर्नशिप कार्य, क्षेत्र अध्ययन व विविध पाठ्य सहगामी क्रियाकलाप के रूप में लगातार मूल्यांकन की अवसर उपलब्ध कराने पर विचार किया जाना चाहिए।

- **बल केन्द्रित शिक्षण–शास्त्र को बढ़ावा**–बाल केन्द्रित शिक्षण शास्त्र को बढ़ावा देने वाले मूल्यांकन के प्रविधियाँ का विकास किया जाना चाहिए जिससे प्रत्येक बालक के अन्तर्गत निहित क्षमता का सर्वाधिक विकास किया जा सके और उसे अपने अनुभव, विचार और सहभागिता से अपने ज्ञान की रचना स्वयं का सके और उनकी रचानात्मक विकसित हो।
- **कार्य के आधार पर पृष्ठ पोषण प्रदान करना**–सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन प्रक्रिया का ही एक मुख्य उदेश्य बच्चों को उनके प्रगति के आधार पर पृष्ट–पोषण प्रदान करना है ताकि बच्चे अपने कमियों को समाप्त कर सके। यह पृष्ट–पोषण परिजनों की उपस्थिति में भी शिक्षक अभिभावक गोस्ठी के दौरान दिया जाए ताकि परिजन अपने बच्चों के प्रगति से परिचित हो सके तथा आपेक्षित सहभागिता सुनिश्चित करें।
- **मूल्यांकन के उपकरणों का चयन,क्रियान्वयन व फलांकन**

इसमें शिक्षक प्रत्येक बच्चे का, छोटे–छोटे समूह में, व पूर्ण कक्षा के बच्चों का लगातार अवलोकन करते है। पेपर पेन/पेंसिल टेस्ट, दत्तकार्य, परियोजना, प्रायोगिक कार्य, प्रतिवेदन तैयार करना, व सेमिनार प्रस्तुतीकरण विभिन्न सह शैक्षिक गतिविधियाँ सहभागिता व प्रस्तुतिकरण, पोर्ट पोलियो/पोस्ट फोलियो का निर्माण, आई सी टी व प्रौद्योगिकी की जानकारी, नुस्ठान निर्देशों का निर्माण, मौखिक साक्षात्कार मौकड्रिल करवाते हैं, प्रगति पत्र तैयार करना, उपाधि प्रदान करना आदि गतिविधियाँ सम्मलित हैं ।

- **आलेख संधारित करना**– सी0 सी0 ई0 के प्रक्रिया में बच्चों के द्वारा प्राप्त उपलब्धियों का विभिन्न रूप में आलेखित करते हुए संधारित की जाती है जिससे किसी भी बच्चे के प्रगति को आसानी से समझा जा सकता है।
- **सीखने के प्रतिफल का निर्माण**– मूल्यांकन का आधार सीखने के प्रतिफल के सापेक्ष होनी चाहिए। आज की शिक्षा व्यवस्था में प्रत्येक विषय व प्रत्येक पाठ्यक्रम का समसत्र वार व सत्रवार Plo, Clo, निर्धारित होते है। जिसे पाठ के समापन, सत्र की समाप्ति के बाद बच्चों को प्राप्त करने का लक्ष्य निर्धारित होते है। अतः मूल्यांकन भी उसी प्रतिफल के आलोक में की जानी चाहिए। जो सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की प्रमुख विशेषता है।
- **हमारा दायित्व**– सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की प्रक्रिया में सभी हितधारकों की दायित्व को स्पष्ट रूप से निर्धारित की गई है जिसका पालन करना पड़ता है जैसे–
- **शिक्षक के दायित्व**– इसमें बाल केन्द्रित शिक्षण के अनुरूप मूल्यांकन भी बालकेन्द्रित होआधार रेखा मूल्यांकन/पदस्थापन कर समूह के अनुसार शिक्षण आकलन योजना बनाना, कक्षा–कक्षीय प्रक्रिया में योजना के अनुसार शिक्षण करते हुए मूल्यांकन सतत् करना, बच्चों की प्रगति से बच्चों और उनके अभिभावकों को अवगत कराने के लिए लिखकर रखना, आवश्यकता अनुरूप शिक्षण व्यूह, योजना विधि में परिवर्तन लाना सम्मलित हैं ।
- **संस्था प्रधान के दायित्व**– इसमें सही मूल्यांकन योजना का चयन व क्रियान्वयन करवाना,_शैक्षिक प्रगति से सम्बन्धित आलेख संधारण सुनिश्चित करवाना, मासिक समीक्षा बैठक का आयोजन करना व आने वाली चुनौतियों का यथोचित ढंग से समाधान करना, अभिभावक शिक्षक गोष्ठी का आयोजन करना व प्रगति से अवगत करवाना, समय–समय पर प्राप्त मूल्यांकन सम्बन्धि शासकीय दिशानिर्देषों का अक्षरशः अनुपालन कराना, स्पष्ट अनुष्ठान निर्देशों का निर्माण कर सभी हितधारकों तक पहुँचाना आदि गतिविधियाँ सम्मलित हैं।
- **सामुदायिक सहभागिता**– इससे बच्चों की प्रगति के साथ ही साथ शिक्षक व शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की प्रगति होती है। अभिभावक व सामुदायिक सदस्य के सहभागिता से एक अच्छे विकसित वातावरण का निर्माण होता है। जहाँ किसी भी योजना को आसानी से क्रियान्वित कर पाना सम्भव हो पाता है। अतः सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की प्रक्रिया में इसे विशेष स्थान दिया गया है।

शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में CCEकी प्रासांगिकताः

- **अधिगम् प्रक्रियाका मूल्यांकन**–CCE की प्रक्रिया प्रशिक्षुओं को यह समझने में सहायता प्रदान करती है कि बच्चे किस प्रकार से सीखते है। प्रशिक्षु और प्रशिक्षक दोनों के लिए यह लाभकारी है।
- **व्यवहारिक शिक्षण में सहायक**–CCE की प्रक्रिया से प्रशिक्षुओं को व्यवहारिक शिक्षण तकनीकों में दक्ष बनाया जाता है। जिससे प्रशिक्षु वास्तविक जीवन की चुनौतियों के लिए तैयार हो सकते है।

- **समावेशी भावना का विकास–**विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्टभूमि से आने वाले बच्चों को समावेशित ढंग से प्रशिक्षण प्रदान करने के प्रर्याप्त अवसर CCE द्वारा उपलब्ध कराये जाते है जिससे समाज के सभी वर्गों का विकास सम्भव होता है।
- **स्थानीयता को बढ़ावा–**ग्रामीण और शहरी विद्यालयों की अवस्थिति के अनुरूप विभिन्न सन्दर्भों में शिक्षकों को शिक्षण के विभिन्न तरीकों का उपयोग करने को सिखाया जाता है जिसे CCE के माध्यम से हम आसानी से मूल्यांकित कर पाने में सक्षम हो पाते है।
- **वैश्विक मूल्यों का विकास–NEP 2020** की मूल भावना है कि हम राष्ट्रीय भावना के साथ–साथ वैश्विक सोच को विकसित कर सके जिसके तहत प्रशिक्षुओं को स्थानीय आवश्यकताओं के साथ ही साथ वैश्विक दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित किया जाता है।

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु सुझाव :

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु कई रणनीतियों को एकीकृत रूप से अपनाना आवश्यक है। सबसे पहले, शिक्षकों और प्रशिक्षकों के लिए नियमित अंतराल पर प्रशिक्षण कार्यशालाओं का आयोजन किया जाना चाहिए, जिससे वे मूल्यांकन की नवीनतम विधियों, उपकरणों और तकनीकों से अद्यतन रह सकें। इसके साथ ही, प्रशिक्षुओं को प्रौद्योगिक रूप से सक्षम बनाना अत्यंत आवश्यक है ताकि वे डिजिटल प्लेटफार्मों का उपयोग कर मूल्यांकन को अधिक सटीक, त्वरित और पारदर्शी बना सकें। स्थानीय संसाधनों का समुचित उपयोग करके न केवल लागत में कटौती की जा सकती है, बल्कि मूल्यांकन प्रक्रिया को स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप भी बनाया जा सकता है। प्रशासन और प्रबंधन का संवेदनशील एवं उत्तरदायी होना भी अनिवार्य है, जिससे कि मूल्यांकन की प्रक्रिया में पारदर्शिता, जवाबदेही और सतत सुधार सुनिश्चित हो सके। इसके अतिरिक्त, मूल्य परक शिक्षा एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार कर उन्हें लागू किया जाना चाहिए, जिससे विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं आत्ममूल्यांकन की भावना का विकास हो सके। अंततः, समुदाय की भागीदारी को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, ताकि मूल्यांकन केवल एक शैक्षणिक औपचारिकता न रहकर, समाज के विकास से जुड़ा एक सशक्त उपकरण बन सके। जब उपर्युक्त सभी पहलुओं को एक समन्वित ढंग से लागू किया जाता है, तब सतत एवं व्यापक मूल्यांकन प्रणाली वास्तव में प्रभावी, समावेशी और विद्यार्थी केंद्रित बन सकती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः

1. पाठक, पी.डी. (1995) : भारतीय षिक्षा और उसकी समस्याये, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
2. कुलश्रेष्ठ, एम.पी (2005) : षिक्षा मनोविज्ञान, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ ।
3. कौल लोकेष (2005) : शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली,, आर. लाल बुक डिपेा, मेरठ।
4. शर्मा एवं चतुर्वेदी, आर. ए. एवं षिखा (2007)) : शैक्षिक एवं व्यवसायिक निर्देषन तथा परामार्ष , आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ।
5. शर्मा और भार्गव (2006) : षिक्षा मनोविज्ञान, एच. पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा।
6. अस्थान, बिपिन (2016/17) : अधिगम कि लिए आंकलन, आगरा पब्लिकेषन, आगरा।
7. सिंह, रामपाल व शर्मा, ओ. पी. (2007/2008) : "शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी आगरा पब्लिकेषन, आगरा।